एस• एस• कॉलेज जहानाबाद।
विभाग - हिन्दी
विषय - हिन्दी रचना - पत्र
वर्ग - स्नातक भाग १.
शिक्षण माध्यम - वाट्स . एप
समय - 11 बजे से 12 बजे - 7.9.2020
शिक्षक - डॉ• रमेश शर्मा
पाठ - पत्र लेखन
प्रिय - छात्र-छात्राओं !

पत्र-लेखन सामान्यतया तीन तरह के होते हैं — १. वैयक्तिक २. सामाजिक ३. संस्थानिक या प्रशासनिक। प्राय: इन तीनों प्रकारों के पत्रों का लेखन आपकी परीक्षा में प्रश्न के रूप में पूछे जाते हैं। इन तीनों प्रकार के पत्रों के स्वरूप पर विचार की आवश्यकता है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि पत्र-लेखन के माध्यम से व्यक्ति अपने हृदय के उद्गारों को खोलकर अभिव्यक्त करता है।

सर्वप्रथम हम वैयक्तिक पत्रों पर विचार करें — इसमें अपने मन की बात, अपने निकट के संबंधी, मित्र आदि, के समक्ष खोलता है और उसके मन की बात जानना चाहता है। जैसे अपने मित्र के यहाँ आगामी परीक्षा की तैयारी से संबंधित पत्र जब व्यक्ति लिखता है तब वह अपनी कमजोरी भी उजागर करता है और अपने मन की बात में भावी योजना की जानकारी भी देता है इसलिए कि वह अपने मित्र से योजनाओं की खूबियों और त्रुटियों दोनों पर उसकी प्रतिक्रिया जानना चाहता है। इससे आत्मीय संबंध विकसित होता है, यही सबसे मूल बात है।

पत्र-लेखन भी एक कला है। साहित्य में भी इनका उपयोग होने लगा है। वैसे जिस पत्र की जितनी स्वाभाविकता होगी वह पत्र उतना ही प्रभावशाली होगा। एक अच्छे पत्र के लिए कलात्मक सौन्दर्य बोध और अन्तरंग भावनाओं का अभिव्यंजन होना आवश्यक है। पत्र के माध्यम से लेखक की केवल भावनाएँ ही व्यक्त नहीं होनी चाहिए वरन् उसका व्यक्तित्व (Personality) भी उभरना चाहिए तब वह अधिक प्रभावशाली होता है।

सामान्यतया पत्र-लेखन के लिए इसकी कुछ विशेषताओं की ओर ध्यान देना आवश्यक है —

1. सरल भाषा-शैली 2. विचारों की सुस्पष्टता 3. संक्षेप और सम्पूर्णता, 4. प्रभावोत्पादकता 5. बाहरी सजावट।

सरल भाषा शैली — चूंकि जिसे हम पत्र लिखते हैं वह उम्र और योग्यता में छोटा-बड़ा भी होता है इसलिए सहज-सरल भाषा में अपनी बात रखनी चाहिए। घुमावदार एवं आलंकारिक भाषा के प्रयोग से बचना चाहिए।

इसी तरह बनावटीपन और कृत्रिमता से दूर सुस्पष्ट विचारों से युक्त भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

संक्षेप और सम्पूर्णता से तात्पर्य पत्र को बहुत बड़ा नहीं होना चाहिए पर सारी बातें उसमें समाहित होनी चाहिए जो आप कहना चाहते हैं।

पत्र प्रभावोत्पादक नहीं हुआ तो उसका औचित्य ही नहीं है।

बाहरी सजावट से तात्पर्य कागज की सफाई, लिखावट की सुन्दरता, तिथि, जिसे पत्र लिखा जाए उसकी आयु, इज्जत से संबंधित सम्बोधन से भी है।

[illegible]
7.4.20